

श्रुयतां श्रुयतां नित्यं गीयतां गीयतां मुदा ।
चिन्त्यतां चिन्त्यतां भक्ता श्रुतन्य चरितामृतम् ॥

चारिवेदं दधि-भागवतं नवनीतं । मयिलेन सुक-खाइलेन परीक्षितं ॥ (कै: ७: २२) ॥
नेई श्रीमद्भागवतेर अनन्तमनिर्यास द्वारा श्रीपादकृष्णदास कविराज गोस्वामी ब्रजेल-
मुकुटमणि श्रीश्री राधाकुण्डलते श्रीचेतन्यचरितामृत ग्रंथ रचना करिबेछेन ।
एई ग्रंथ लेखाम मोरे मदनमोहन । आमारलिखन येन सुकेर पठन ॥
श्रीरूप रघुनाथपदेवार आश । चेतन्यचरितामृत कहै कृष्णदास ॥ (कै: ७: ७) ॥



येवानाहिवुरोकोहो, शुनिते शुनिते से हो, कि अद्भुत चेतन्य चरित ।
कृष्णे उपजिवे प्रीति, जानिवे रसेर रीति, शुनिले हहवेवडहित ॥ ४११ ॥

येवा नाहि बुझे के हो, शुनिते शुनिते से हो, कि अद्भुत चेतन्य चरित ।
कृष्णे उपजिवे प्रीति, जानिवे रसेर रीति, शुनिले हहवेवडहित ॥